International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(II), January- March, 2025, pp. 223-227

सामाजिक उद्यमिता की प्रभावकारिता पर पारिस्थितिकी तंत्र का प्रभाव

Dr. Seema Gotwal*

सार

मानवता ने प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और कई अन्य क्षेत्रों में कई विकास देखे हैं। वर्तमान परिदृश्य में आज भी समाज समग्र उत्थान से वंचित है। इसके अलावा, ज़रूरतमंद सामाजिक आबादी के कई स्तरों को या तो सुविधाजनक रूप से अनदेखा कर दिया जाता है या उसी समाज के प्रमुख लोगों द्वारा आंशिक रूप से ध्यान दिया जाता है। सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए उद्यमिता पर सामाजिक मिशन को आरोपित करने की सटीक दृष्टि से है, नई लाइन सामाजिक उद्यमिता और उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र पर पारंपरिक उद्यमों (पूरी तरह से लाभ–उन्मुख) की संख्या सामाजिक उद्यमों से कहीं अधिक है। शोध पत्र में सामाजिक उद्यमिता के विकास को बढ़ाने और समर्थन करने के लिए पारंपरिक उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा बनाई जा सकने वाली पूरक भूमिका के बारे में अपर्याप्त जानकारी भी पाई। इसके अलावा, सामाजिक स्टार्ट–अप की स्थापना को आसान बनाने के लिए एकल खिड़की का माहौल अपनी अनुपस्थिति के कारण स्पष्ट है। भारत में सामाजिक उद्यमिता और इसके पारिस्थितिकी तंत्र की अवधारणा के आसपास की उपलब्धता, उपयोग और सीमाओं का अध्ययन करने का एक प्रयास है। अध्ययन सामाजिक उद्यमिता और उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र के आसपास के विषयों और उस प्रक्रिया का पता लगाएगा जिसके आधार पर सामाजिक उद्यम लंबे समय में स्थिरता प्राप्त कर सकते हैं। यह अध्ययन परस्पर क्रियाशील उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र घटकों को समझने, सामाजिक उद्यमों पर इन घटकों के प्रभाव और अपने वातावरण में सामाजिक उद्यमों के प्रभावी कामकाज को सुविधाजनक बनाने के लिए उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र के घटकों के वांछनीय अनुकूलन पर केंद्रित है।

शब्दकोश: *प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, सामाजिक उद्यमिता, उद्यमशीलता, पारिस्थितिकी तंत्र, पारंपरिक उद्यमिता, सामाजिक उद्यम, सामाजिक उद्यमी और स्थिरता।*

प्रस्तावना

यह अध्ययन गुणात्मक प्रकृति का है, इसलिए इसका प्राथमिक लक्ष्य रुचि के विशेष क्षेत्र में विशेषज्ञता को बढ़ाना और अध्ययन के क्षेत्र में पहले से उपलब्ध जानकारी के भंडार में योगदान देना है।

अध्ययन का उद्देश्य उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र के उन चरों की पहचान करना है जो सामाजिक उद्यमियों और उनके उद्यमों को प्रभावित करते हैं, साथ ही उन कई तत्वों की भी पहचान करना है जो उनकी फर्म के संचालन पर प्रभाव डालते हैं"। शोध पत्र लेखन से यह समझने का भी प्रयास किया है कि पारिस्थितिकी तंत्र के घटक सामाजिक उद्यमों की स्थिरता को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

* Associate Professor, Business Administration, SPC Government College, Ajmer, Rajasthan, India.

शोध पत्र लेखन के विशिष्ट उद्देश्य

- सामाजिक उद्यमिता को प्रभावित करने वाले उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र कारकों की पहचान करना।
- सामाजिक उद्यमिता और पारंपरिक उद्यमिता की प्रभावकारिता पर उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र कारकों के प्रभाव की तुलना करना।
- सामाजिक–जनसांख्यिकीय कारकों का विश्लेषण करना जो व्यक्तियों को सामाजिक उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करते हैं।
- सामाजिक उद्यमिता के सतत विकास को बढ़ावा देने वाले उद्यम कारकों का आकलन करना।

यह शोध पत्र विशेष रूप से प्रगतिशील नीति ढांचे, सांस्कृतिक मूल्यों और वित्त तक पहुंच, बाजार की उपलब्धता, मानव पूंजी और संस्थागत समर्थन की जांच कर रहा है जो पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं। सवाल यह है कि पारंपरिक उद्यम लाखों में क्यों हैं जबकि सामाजिक उद्यम केवल सैकड़ों में हैं। सांख्यिकीय डेटा उद्यमों की संख्या प्रदान करता है, लेकिन सामाजिक उद्यमों को नहीं। यह सामाजिक उद्यमिता की उपेक्षित स्थिति है जिसे यह शोध पत्र संबोधित करने का प्रयास कर रहा है।

शोध पत्र लेखन की आवश्यकता और महत्व

यह माना जाता है कि उद्यमी पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण से आर्थिक विकास और सामुदायिक पुनरुद्धार दोनों हो सकते हैं। सामाजिक और आर्थिक मुद्दों को संबोधित करने की अपनी क्षमता के कारण, सामाजिक उद्यमिता एक और आंदोलन है, जो लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र में सामाजिक उद्यमियों के संभावित योगदान के बारे में अनिश्चितता बनी हुई है। फिर भी, अध्ययनों ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया है कि पारिस्थितिकी तंत्र के अभिनेता जैसे कि वित्तपोषक और सहायता समूह पारिस्थितिकी तंत्र के प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, यह अज्ञात है कि सामाजिक उद्यमियों द्वारा संचालित उद्यमी पारिस्थितिकी तंत्र का उनके व्यवसायों के निर्माण और प्रबंधन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। वर्तमान शोध इन मुद्दों को संबोधित करने का प्रयास करता है। भारत में, सामाजिक उद्यमिता धीरे–धीरे स्वीकार्यता प्राप्त कर रही है। कई वर्षों से, भारत में सामाजिक व्यवसायों ने परिवर्तन एजेंटों के रूप में काम किया है। उनके सामने आने वाली कई समस्याओं के कारण, सामाजिक उद्यम संघर्षरत हैं। समर्पित प्रयासों और रचनात्मक विचारों को सामने रखकर, इस उद्योग में सफल होने के कई अवसर हैं। फिर भी, सामाजिक उद्यमों को अपनाने योग्य बनाने और सभी बाधाओं के बावजूद टिके रहने के लिए, उद्योग, इसके खिलाड़ियों और सरकार को इस उद्योग को परेशान करने वाली कई समस्याओं का समाधान खोजने के लिए सहयोग करना चाहिए, यह ध्यान में रखते हुए कि ये वही व्यवसाय हैं जो समाज में वास्तविक और रचनात्मक सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम करते हैं। सामाजिक उद्यमियों को अक्सर कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसके लिए उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सहायता समूहों की सहायता पर भरोसा करने की आवश्यकता होती है। उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र के संदर्भ में, सामाजिक उद्यमियों को वाणिज्यिक उद्यमों के समकक्ष अपने अनूठे विचारों या दृष्टिकोणों के साथ सामाजिक, पर्यावरणीय और आर्थिक परिवर्तन लाने में अपनी भूमिका को परिभाषित करना होता है। इस कारण यह लेखन शोध के लिए एक समृद्ध क्षेत्र प्रदान करता है।

अनुसंधान पद्धति

सामाजिक उद्यमिता के महत्व और भविष्य की गहन व्याख्या प्रदान करता है। यह व्यवसाय के विकास, सामाजिक उद्यमिता के विकास, उद्यमिता और सामाजिक उद्यमिता के सिद्धांतों और व्यवसाय पारिस्थितिकी तंत्र के विकास का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।गुणात्मक और मात्रात्मक आयामों का निर्धारण करना है।भारत राष्ट्र प्रयोगों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल रहा है, एक शिक्षण प्रयोगशाला जहाँ एक जीवंत नागरिक समाज ने सामाजिक विकास को आगे बढ़ाया है और इसके अलावा सामाजिक उद्यमियों के रूप में नेटवर्क की भूमिका को प्रदर्शित किया है। कई लोग एक गतिशील भूमि के रूप में जहाँ समाधान तैयार किए जा रहे हैं जो गरीबी और

असमान विकास की कठिनाइयों को दूर कर सकते हैं, भारत में सामाजिक उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र को पहचानते हैं। हालाँकि, सामाजिक उद्यमशीलता गतिविधि में वृद्धि के साथ–साथ विभिन्न दृष्टिकोणों पर बातचीत नहीं हुई है जो भारतीय सामाजिक उद्यमशीलता गतिविधियों को एक तरह का बना सकते हैं।सामाजिक उद्यमिता, जो वर्तमान में एक वैश्विक आंदोलन है, मानव समाज में कुछ समूहों द्वारा अनुभव की गई अंतर्निहित, दीर्घकालिक समस्याओं को हल करने पर केंद्रित है, जैसे अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, असमानता आदि। एक सामान्य व्यवसाय के विपरीत, सामाजिक उद्यमिता में एक सामाजिक कारण और एक लक्ष्य होता है जो गहराई से निहित होता है। सामाजिक उद्यमिता में संलग्न होने के लिए, एक सामाजिक उद्यमी को पहले एक अवसर देखना चाहिए और इसे एक ऐसे कारण से जोड़ना चाहिए जो सीधे प्रभावित लोगों की मदद करता है। सामाजिक उद्यमियों द्वारा उत्पादित रचनात्मक और अद्वितीय समाधानों का उपयोग करके, समुदाय को सामान्य जीवन जीने में मदद की जाती है। लंबी अवधि में, सामाजिक उद्यमी सामाजिक–आर्थिक उतार–चढ़ाव को संतुलन में लाकर अर्थव्यवस्था के कामकाज पर प्रभाव डालते हैं। सामाजिक उद्यमिता अपने अभिनव बाजार तंत्र के साथ तीन प्रमुख हितधारकों उद्यमियों, सरकार और जनता को प्रभावित करती है, जो उन्हें एक ऐसे अंतर्संबंध में उत्तेजित करती है जिसके परिणामस्वरूप सतत विकास होता है।

सामाजिक उद्यमिता

सामाजिक उद्यमिता उद्यमिता का एक स्वरूप है, जो सामाजिक मापदंडों में अंतर के साथ मुख्यधारा के व्यवसाय की तरह है। सामाजिक उद्यमिता एक प्रचलित शब्द है जो न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में गूंजता है। जैसे–जैसे इसकी जागरूकता प्रकाश की तरह फैलती है, लोग उद्यमिता और सामाजिक मूल्यों के संयोजन के विचार से खुद को परिचित करने लगे हैं। सामाजिक उद्यमिता पारंपरिक उद्यमिता से अलग है। जबकि बाद वाले का एकमात्र उद्देश्य समाज की जरूरतों को अनदेखा करके लाभ कमाना होता है, सामाजिक उद्यमिता उद्यमिता को वाहन के रूप में उपयोग करती है समाज के कल्याण के लिए निरंतर प्रयास करना। इस युग में, तकनीकी चेतना के विकास की विशेषता है जो तेजी से औद्योगिकीकरण की ओर ले जाती है, सामाजिक चेतना का विकास वास्तव में पीछे छूट गया है। ऐसे परिदृश्य में, सामाजिक उद्यमिता मानवता की भावना को पुनर्जीवित करती है और उन लोगों को स्वागत योग्य उत्तर प्रदान करती है जो इससे जुड़ते हैं, जिससे उदार व्यक्तियों की बढ़ती संख्या सामाजिक उद्यमी बनने के लिए प्रेरित होती है। सामाजिक उद्यमिता का विचार पूरी तरह से नया नहीं है। इसके बारे में जो नया है वह यह है कि इन कठिन समय में लोगों को यह कितना आकर्षक लगता है। कई प्रसिद्ध भारतीय व्यवसायों ने समुदाय में योगदान करते हुए लाभ कमाने की आवश्यकता को महसूस किया है। सामाजिक उद्यमी यह मानते हैं कि उद्यमियों की नैतिक जिम्मेदारी है कि वे जिस समाज में काम करते हैं, उसकी देखभाल करें और केवल संसाधनों को निकालने और लाभ कमाने पर ध्यान केंद्रित न करें। यह सामाजिक रूप से अभिनव, व्यवहार्य और टिकाऊ विचारों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। जो समाज को समग्र रूप से सशक्त बनाता है। सामाजिक उद्यमिता वास्तव में समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के अन्य घटकों में मूल्य बनाने के लिए एक शक्तिशाली तंत्र है।

सामाजिक उद्यम

सामाजिक उद्यम एक ऐसा उद्यम है जो केवल सामाजिक मिशन के साथ काम करता है, न कि लाभ के लिए और अपने सामाजिक लक्ष्यों को पूरा करने में निरंतर वृद्धि सुनिश्चित करता है। वे या तो लाभ कमाते हुए सामाजिक प्रभाव बनाने पर ध्यान केंद्रित करना पसंद करते हैं या केवल सामाजिक मिशन पर जोर देते हैं। जबकि उनमें से अधिकांश (भारत और दुनिया दोनों में) एक सामाजिक मिशन के साथ पारम्परिक/पारम्परिक उद्यमों की तरह काम करते हैं, प्रभावी ढंग से और समय पर प्रभाव पैदा करने के लिए, लाभ कमाना कभी भी प्राथमिक लक्ष्य नहीं हो सकता है। ब्प् और झच्डळ सोशल एंटरप्रेन्योरशिप लैंडस्केप इन इंडिया रिपोर्ट 2021 के अनुसार, केवल 9% नैतिक फर्म/सामाजिक फर्म लाभ के लिए तैयार हैं। हालाँकि, "ट्रिपल बॉटम लाइन" (Tripple Bottom Line)या "मल्टीपल बॉटम लाइन" (Multiple Bottom Line) वाले सामाजिक उद्यम हैं जो वित्तीय,

सामाजिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों को एक साथ आगे बढ़ाते हैं। इसके अलावा, पारंपरिक या पारंपरिक व्यवसायों के विपरीत सामाजिक उद्यम प्रतिस्पर्धा की चुनौती में भाग नहीं लेते हैं। चूँकि उनके सामाजिक उद्देश्य होते हैं, इसलिए ऐसे उद्यम अपने ज्ञान और प्रभावी प्रथाओं को साझा करते हैं।

उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र

उद्यमी पारिस्थितिकी तंत्र में संभावित और वर्तमान उद्यमियों, उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने वाले प्रतिष्ठानों, उद्यम पूंजीपतियों, देवदूत निवेशकों और वित्तीय संस्थानों, शैक्षणिक संस्थानों और सरकारी निकायों के विविध समूह शामिल हैं। पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर होने वाली उद्यमशीलता गतिविधियों में जन्म लेने वाले नए उद्यमों की संख्या, विकास की बहुत अधिक संभावना वाले उद्यमों की संख्या, क्रमिक उद्यमियों और उनकी संस्थाओं की उपस्थिति शामिल है। एक पारिस्थितिकी तंत्र ऐसे वातावरण में संचालित होता है जो नवाचार के लिए अनुकूल होता है, जिसमें नौकरशाही की कम बाधाएँ होती हैं, सहायक सरकारी नीतियाँ और संस्थान होते हैं, सहभागी नेतृत्व होता है, और एक सहयोगी निवेश बोर्ड होता है जो सभी हितधारकों की ज़रूरतों के अनुरूप बेहतर कल के लिए सांस्कृतिक कठोरता को बदलने के लिए नवाचार करने की आवश्यकता को पुष्ट करता है। इसमें सामाजिक सांस्कृतिक, सरकार की नीतियाँ और कार्यक्रम, बाज़ार की उपलब्धता और वित्त, मानव पूंजी और बुनियादी ढाँचे तक पहुँच जैसे डोमेन शामिल हैं।

उद्यमिता का विकास

उद्यमिता एक ऐसी गतिविधि है जो व्यवसाय जगत में कई जोखिमों को उठाकर लाभ उठाने के लिए किसी उद्यम को बनाने, उसे विकसित करने और संचालित करने के विचार के कार्यान्वयन से संबंधित है। विश्व बाजार के लिए उद्यमिता आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण रही है। व्यापक अर्थ में, यह हमारे समाज में सबसे अधिक दबाव वाले सामान्य मुद्दों को संबोधित करके यथास्थिति को बदलने का कार्य है, या तो किसी नए सामान या सेवा के प्रावधान के माध्यम से या नए बाजारों के उद्घाटन के माध्यम से। हालाँकि उद्यमिता की अधिकांश परिभाषाएँ व्यवसाय शुरू करने और संचालित करने पर केंद्रित हैं, लेकिन स्टार्ट–अप का एक महत्वपूर्ण हिस्सा (चाहे वह लाभ के साथ हो या बिना लाभ के या मामूली लाभ वाला लेकिन सेवा उद्देश्य वाला उद्यम हो) फंडिंग की कमी, व्यवसाय में खराब निर्णय लेने, आर्थिक संकट या इन सभी के संयोजन या ग्राहकों की अपर्याप्त मांग के कारण विफल हो जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि व्यवसाय शुरू करने में उच्च लागत के कारण उच्च जोखिम होता है। "उद्यमिता" शब्द को 2000 के दशक में उस प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए विस्तारित किया गया है जिसके माध्यम से व्यक्ति या टीम यह निर्धारित करने के लिए संभावनाएँ खोजती है कि क्या वे व्यवहार्य हैं, और फिर उनका लाभ उठाने का विकल्प चुनती है। हम यह कहकर निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उद्यमिता एक ऐसा कार्य है जिसमें किसी वातावरण में मौजूद अवसरों का लाभ उठाना शामिल है।

निष्कर्ष

उद्यमी पारिस्थितिकी तंत्र एक अंतर–संबंधित समुदाय है जो उद्यमों, संस्थानों, संगठनों, प्रशासनिक निकायों और भौगोलिक क्षेत्र में व्यापार और वाणिज्य, संस्कृति, समर्थन संरचना और बाजारों जैसे कारकों की मेजबानी करता है जो नए उद्यमी उपक्रमों को बढ़ावा देने और उन्हें व्यापक प्रदर्शन के लिए गति देने के लिए एक साथ काम करते हैं। उद्यमी पारिस्थितिकी तंत्र के पहिये अपने समुदाय के निरंतर परिवहन को उत्पन्न करते हैं, अपने अंतर्निहित विशेषाधिकारों को पारस्परिक पोषण और विकास की दिशा में लेन–देन के माध्यम से निरंतर ज्ञान हस्तांतरण के साथ घुमाते हैं। विश्वविद्यालय वह पालना हैं जो उद्यमी दुनिया के सेल्सपर्सन, व्यवसाय निर्माण पेशेवरों, विपणक और उच्च तकनीक विशेषज्ञों को पेश करने के लिए प्रतिभा की खोज और पोषण करते हैं। वे उद्यमिता में प्रवीण हैं जो नवोदित व्यक्तित्वों में सामाजिक उद्यमिता चरित्र को गढ़ने की क्षमता रखते हैं। विभिन्न विषयों में मानव प्रतिभा का एक बड़ा पूल उद्यमी पारिस्थितिकी तंत्र का एक प्रमुख घटक है। पारिस्थितिकी तंत्र का अगला प्रमुख तत्व बीज पूंजी, व्यापार स्वर्गदूतों और उद्यम पूंजी प्रदान करने वाले उद्यम पूंजीपतियों का एक समुदाय है। एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र को समर्पित और जिम्मेदार उद्यमी नेताओं की एक

फसल को जन्म देना चाहिए जो लोकप्रियता के बजाय ठोस परिणामों की परवाह करते हैं। उन्हें विश्वसनीय, सुलभ, पारदर्शी और खतरनाक चुनौतियों का सामना करते हुए भी काम जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध रहते है। एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र का एक और स्तंभ उचित मूल्य की उपलब्धता है।

सामाजिक उद्यमिता का मतलब मौजूदा सामाजिक मुद्दों को पहचानना और उद्यमी विचारों, तरीकों और गतिविधियों के इस्तेमाल के ज़रिए सामाजिक बदलाव लाना है। यह एक तरह का व्यावसायिक उद्यम है जो किसी सामाजिक समस्या को बदलने के लिए उसे स्वीकार करने की कोशिश करता है। चुनौती स्वीकार करने वाले व्यक्ति को सामाजिक उद्यमी कहा जाता है और वह मुख्य रूप से लाभ–केंद्रित होने के बजाय सामाजिक पूंजी बनाने के उद्देश्य से उद्यमशीलता के सिद्धांतों को लागू करता है। सामाजिक उद्यमी स्वाभाविक रूप से भावनात्मक रूप से आवेशित व्यक्ति होते हैं जो वास्तव में दबाव वाली सामाजिक–आर्थिक समस्याओं का समाधान चाहते हैं और समाज को गरीबी से समृद्धि में बदलने का इरादा रखते हैं। इच्छित सामाजिक परिवर्तन करने के लिए, एक सामाजिक उद्यम को उद्यमी अवधारणाओं का उपयोग करके संगठित, निर्मित और प्रबंधित किया जाना चाहिए। सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों का विस्तार करना सामाजिक उद्यमिता का मुख्य उद्देश्य है। हाल के दिनों में, भारत सामाजिक उद्यमिता की प्रभावकारिता पर पारिस्थितिक तंत्र का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है और सामाजिक उद्यमियों द्वारा सामाजिक चुनौतियों की एक श्रृंखला के लिए व्यवहार्य परिणाम खोजने के लिए पहल की जा रही है। शोध पत्र लेखन में उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र और सामाजिक उद्यमिता के बीच संबंध का विश्लेषण किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.enterpreneur.com
2. www.https:/indeed.com
3. https://www.careerexploer.com
4. https://www.slideshare.net
5. https://www.shiksha.com
6. https://www.kailasheducation.com
7. https://www.indiagovernment.com
8. https://www.bajajfinserv.in
9. https://hi.wikipedia.org
10. https://www.onlinemba.com
11. https://www.investopedia.com
12. https://sites.google.com
13. https://ebook.infilbnet.ac.in
14. https://www.freebookcentre.net
15. https://link.springer.com
16. https://bookstore.emerald.com
17. https://www.astisanfurniture.net

❖◆❖